ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 3, March 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

fujkyk ds dk0; esa ekuorkokn

Mk0 xhrk flag

,e-,-] ih&,p-Mh-

ohj dqoj flag fo”ofo|ky;] vkjk

मानवता वाद की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि

मानवता वाद क्या है यह जानने के लिए तीन शब्दों 'मानव', 'मानवता' और 'वाद' ds lc/k esa Øe”k% fopkj djuk vko”;d gA fdlh in dk अर्थ उसके मूल शब्द का अधीन रहता है। अतएव किसी शब्द के अर्थ को जानने के लिए उसके मूल पद की ओर दृष्टि व्याप्त करना पड़ता है। इस प्रकार जब मानव के अर्थ पर विचार करना है। तब सोचना पड़ेगा कि इसक मूल शब्द क्या है और उसका अर्थ क्या है। पाणिनी व्याकरण ekuo dh foषय बताता है – मनु का संतान मानव कहलाती है। मनु सृष्टि के आदि पुरूष थे। इस आधार पर सृष्टि के आदि पुरूष 'मनु की संतान का नाम 'मानव' रखना fufookn gA

इस सृष्टि में मानव का स्तर सबसे अच्छा माना गया है, क्योंकि मनुष्य अपने cf);kx l vnHkr peRdkj dj v{k.k l[k dh ikfIr dj ldrk gA og lo0;fØ;k का साकार समूह ही भगवान ने अपने रूप में मनुष्य की सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ जान उसके

मन, शरीर और आत्मा में भर दिया है। इसी शरीर में देवत्य का निवास है जिसे देवी fodfIr gkdj b"ojRo dh T;kfr txexkrh gA vkfLrd vkj ukfLrd Hkh bl ckr को स्वीकार करते हैं – मानव शरीर सर्वोत्कृष्ट है।

ij }U}&dk;jrk rFkk ij l[k e lgn;rk gh ekuo dk vFk i/kku x.k g] मनुष्य सब कुछ हो पर सहृदय न हो तो उसका सब कुछ, तो व्यर्थ है। वस्तुतः सहृदय होना मनुष्य का प्रमुख लक्ष्य है। जो मनुष्य किसी का n%[k nj djd mld l[k l सुखी नही हेाता उसके बारे में यही कहा जायेगा कि उसमें मनुष्यता नहीं प"krk gA जिसके हृदय में दया नही, प्रेम नही, सदविचार नही, वह मनुष्य होकर भी दानव है। मनुष्य की इन्हीं स्वाभाविक गुणों की ओर संकेत करते हुए 'गीता' में यह कहा x;k g] tk Hkrek=, प्राणमात्र से द्वेष नहीं करता सबके साथ मैत्रीभाव रखता है और करूणा की Hkkouk l vkrikr gk lgn;rk dk ifjp; nrk g] fdUr og ml cgr dN fHkUu gA अतः वहां दोनों का अन्तर स्पष्ट कर लेना आव";d gA

ekuorkokn rFkk ekuorkokn e vUrj

ekuorkokn dh Hkkfr ekuorkokn dh lR; dh fo"oluh;rk e fo"okl ugh djrk gA og doy bruk gh Lohdkj djrk g tk lR; vkj okLrfodrk ekuo dh पहुंच के भीतर है,वे यही मनुष्य के लिए पर्याप्त है। इस अर्थ में वह अनि"ojoknh vkj

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 8, Issue 3, March 2018 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

धर्म विरोधी है, उसकी दृष्टि में पारलौकिक सत्य मनुष्य की स्वतंत्रता का अपहरण करती g blfy, ml b”ojh; nkl d :i e thfor j[k ldrh gA

ekuorkokn l[kh 0;fDr dh vkj vf/kd ek=k e l[kh cukuk ugh pkgrk vfir mudk lkjk è;ku ihfMr 0;fDr ij gh jgrk gA nf[k;k dk n[k nj dju d fy, l[kh&lEiUu ykxk dk fldh Hkh idkj dk vk?kkr nu iM rk bl dkb vkifÙk ughA

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि मानव सभ्यता के कार्यक्रम समस्त मानव समाज v/k/kkfedrk i.k#i.k vPNkfnr jgkA èkkfed] lkekftd] vkfFkd ,o jktuhfr {k= e vkè;kfRedrk d uke ij vR;kpkj] iki vkfn dk uXu&uR; gku yxkA ftl mRihfMr ekuork djkg mBhA ;g Hk;kog ifjfLFkfr fnu ifr fnu c<rh gh x;hA यहां तक कि समस्त मध्यकाल में भी इस निखिल दृष्टि और इतिहास क्रम का नियंन्ता fdlh ekuokifj ikjykfdd lRrk dk gh ekuk tkrk gA

T;k&T;k euष्य आधुनिक युग में प्रवे”k djrk x;k R;k&R;k bl ekuokifj lRrk dk voeY;u gkrk x;kA rnUrj ekuuh; xfjek dk ,d uohu Lrj ij vkfoHkko gvk और यह स्वीकार किया गया कि मनुष्य अपने में स्वतः सार्थक एवं मूल्यवान है। वह स्वतः आंतरिक शक्तियों में सम्पन्न होकर चेतन Lrj ij viuh fu;fr&fu.k; yu oky vf}rh; ik.kh gA blh idkj ekuoh; xkjoi.k vkfLrRo e vVV vkLFkk dk uohu pruk u ekuork d dY;k.k ^ekuookn* dk tUe fn;kA

l nHk lph %

1- Nk;kokn & Mk0 ukeoj flg

2- साकेत – मैथिली शरण गुप्त

3- HkkjrUn gfj"pUæ & Mk0 y{eh ukjk;.k lkxj

4- lkfgR; dk bfrgkl n"िन – डॉ0 नलिन विलोचन शर्मा

5- vk/kfud fgUnh dfork & Mk0 fo"oEHkjukFk mikè;k;

6- lLÑr d pkj vè;k; & jke/kkjh flg fnudj

7- ljnkl & ljnkl